Tarun Krishna Das
23 mins ·

"उद्धव-गीता"

उद्धव बचपन से ही सारथी के रूप में श्रीकृष्ण की सेवा में रहे, किन्तु उन्होंने श्री कृष्ण से कभी न तो कोई इच्छा जताई और न ही कोई वरदान माँगा।
जब कृष्ण अपने अवतार काल को पूर्ण कर गौलोक जाने को तत्पर हुए, तब उन्होंने उद्धव को अपने पास बुलाया और कहा-
"प्रिय उद्धव मेरे इस 'अवतार काल' में अनेक लोगों ने मुझसे वरदान प्राप्त किए, किन्तु तुमने कभी कुछ नहीं माँगा! अब कुछ माँगो, मैं तुम्हें देना चाहता हूँ।
तुम्हारा भला करके, मुझे भी संतुष्टि होगी।
उद्धव ने इसके बाद भी स्वयं के लिए कुछ नहीं माँगा। वे तो केवल उन शंकाओं का समाधान चाहते थे जो उनके मन में कृष्ण की शिक्षाओं, और उनके कृतित्व को, देखकर उठ रही थीं।
उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा-
"भगवन महाभारत के घटनाक्रम में अनेक बातें मैं नहीं समझ पाया!
आपके 'उपदेश' अलग रहे, जबकि 'व्यक्तिगत जीवन' कुछ अलग तरह का दिखता रहा!
क्या आप मुझे इसका कारण समझाकर मेरी ज्ञान पिपासा को शांत करेंगे?"
श्री कृष्ण बोले-
“उद्धव मैंने कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में अर्जुन से जो कुछ कहा, वह "भगवद्गीता" थी।
आज जो कुछ तुम जानना चाहते हो और उसका मैं जो तुम्हें उत्तर दूँगा, वह
"उद्धव-गीता" के रूप में जानी जाएगी।
इसी कारण मैंने तुम्हें यह अवसर दिया है।
तुम बेझिझक पूछो।
उद्धव ने पूछना शुरू किया-

"हे कृष्ण, सबसे पहले मुझे यह बताओ कि सच्चा मित्र कौन होता है?"
कृष्ण ने कहा- "सच्चा मित्र वह है जो जरूरत पड़ने पर मित्र की बिना माँगे, मदद करे।"
उद्धव-
"कृष्ण, आप पांडवों के आत्मीय प्रिय मित्र थे। आजाद बांधव के रूप में उन्होंने सदा आप पर पूरा भरोसा किया।
कृष्ण, आप महान ज्ञानी हैं। आप भूत, वर्तमान व भविष्य के ज्ञाता हैं।
किन्तु आपने सच्चे मित्र की जो परिभाषा दी है, क्या आपको नहीं लगता कि आपने उस परिभाषा के अनुसार कार्य नहीं किया?
आपने धर्मराज युधिष्ठिर को द्यूत (जुआ) खेलने से रोका क्यों नहीं?
चलो ठीक है कि आपने उन्हें नहीं रोका, लेकिन आपने भाग्य को भी धर्मराज के पक्ष में भी नहीं मोड़ा!
आप चाहते तो युधिष्ठिर जीतबा सकते थे!
आप कम से कम उन्हें धन, राज्य और यहाँ तक कि खुद को हारने के बाद तो रोक सकते थे!
उसके बाद जब उन्होंने अपने भाईयों को दाँव पर लगाना शुरू किया, तब तो आप सभाकक्ष में पहुँच सकते थे! आपने वह भी नहीं किया? उसके बाद जब दुर्योधन ने पांडवों को सदैव अच्छी किस्मत वाला बताते हुए द्रौपदी को दाँव पर लगाने को प्रेरित किया, और जीतने पर हारा हुआ सब कुछ वापस कर देने का लालच दिया, कम से कम तब तो आप हस्तक्षेप कर ही सकते थे!
अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा आप पांसे धर्मराज के अनुकूल कर सकते थे!
इसके स्थान पर आपने तब हस्तक्षेप किया, जब द्रौपदी लगभग अपना शील खो रही थी, तब आपने उसे वस्त्र देकर द्रौपदी के शील

को बचाने का दावा किया!
लेकिन आप यह यह दावा भी कैसे कर सकते हैं?
उसे एक आदमी घसीटकर हॉल में लाता है, और इतने सारे लोगों के सामने निर्वस्त्र करने के लिए छोड़ देता है!
एक महिला का शील क्या बचा? आपने क्या बचाया?
अगर आपने संकट के समय में अपनों की मदद नहीं की तो आपको आपाद-बांधव कैसे कहा जा सकता है?
बताईए, आपने संकट के समय में मदद नहीं की तो क्या फायदा?
क्या यही धर्म है?"
इन प्रश्नों को पूछते-पूछते उद्धव का गला रुँध गया और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे।
ये अकेले उद्धव के प्रश्न नहीं हैं। महाभारत पढ़ते समय हर एक के मनोमस्तिष्क में ये सवाल उठते हैं!
उद्धव ने हम लोगों की ओर से ही श्रीकृष्ण से उक्त प्रश्न किए।
भगवान श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए बोले-
"प्रिय उद्धव, यह सृष्टि का नियम है कि विवेकवान ही जीतता है।
उस समय दुर्योधन के पास विवेक था, धर्मराज के पास नहीं।
यही कारण रहा कि धर्मराज पराजित हुए।"

उद्धव को हैरान परेशान देखकर कृष्ण आगे बोले- "दुर्योधन के पास जुआ खेलने के लिए पैसाऔर धन तो बहुत था, लेकिन उसे पासों का खेल खेलना नहीं आता था, इसलिए उसने अपने मामा शकुनि का द्यूतक्रीड़ा के लिए उपयोग किया। यही विवेक है।
धर्मराज भी इसी प्रकार सोच सकते थे और अपने चचेरे भाई से पेशकश कर सकते थे कि उनकी तरफ से मैं खेलूँगा।
जरा विचार करो कि अगर शकुनी और मैं खेलते तो कौन जीतता?
पाँसे के अंक उसके अनुसार आते या मेरे अनुसार?
चलो इस बात को जाने दो। उन्होंने मुझे खेल में शामिल नहीं किया, इस बात के लिए उन्हें माफ़ किया जा सकता है। लेकिन उन्होंने विवेक-शून्यता से एक और बड़ी गलती की!
और वह यह-
उन्होंने मुझसे प्रार्थना की कि मैं तब तक सभा-कक्ष में न आऊँ, जब तक कि मुझे बुलाया न जाए!
क्योंकि वे अपने दुर्भाग्य से खेल मुझसे छुपकर खेलना चाहते थे।
वे नहीं चाहते थे, मुझे मालूम पड़े कि वे जुआ खेल रहे हैं!
इस प्रकार उन्होंने मुझे अपनी प्रार्थना से बाँध दिया! मुझे सभा-कक्ष में आने की अनुमति नहीं थी!
इसके बाद भी मैं कक्ष के बाहर इंतज़ार कर रहा था कि कब कोई मुझे बुलाता है! भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव सब मुझे भूल गए! बस अपने भाग्य और दुर्योधन को कोसते रहे!
अपने भाई के आदेश पर जब दुस्साशन द्रौपदी को बाल पकड़कर घसीटता हुआ सभा-कक्ष में लाया, द्रौपदी अपनी सामर्थ्य के अनुसार जूझती रही!
तब भी उसने मुझे नहीं पुकारा!
उसकी बुद्धि तब जागृत हुई, जब दुस्साशन ने उसे निर्वस्त्र करना प्रारंभ किया!
जब उसने स्वयं पर निर्भरता छोड़कर-
हरि, हरि, अभयम कृष्णा, अभयम'
की गुहार लगाई, तब मुझे उसके शील की रक्षा का अवसर मिला।
जैसे ही मुझे पुकारा गया, मैं अविलम्ब पहुँच गया।
अब इस स्थिति में मेरी गलती बताओ?"
उद्धव बोले-
"कान्हा आपका स्पष्टीकरण प्रभावशाली अवश्य है, किन्तु मुझे पूर्ण संतुष्टि नहीं हुई!
क्या मैं एक और प्रश्न पूछ सकता हूँ?"
कृष्ण की अनुमति से उद्धव ने पूछा-

"इसका अर्थ यह हुआ कि आप तभी आओगे, जब आपको बुलाया जाएगा? क्या संकट से घिरे अपने भक्त की मदद करने आप स्वतः नहीं आओगे?"
कृष्ण मुस्कुराए-
"उद्धव इस सृष्टि में हरेक का जीवन उसके स्वयं के कर्मफल के आधार पर संचालित होता है।
न तो मैं इसे चलाता हूँ, और न ही इसमें कोई हस्तक्षेप करता हूँ।
मैं केवल एक 'साक्षी' हूँ।
मैं सदैव तुम्हारे नजदीक रहकर जो हो रहा है उसे देखता हूँ।
यही ईश्वर का धर्म है।"

"वाह-वाह, बहुत अच्छा कृष्ण!
तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप हमारे नजदीक खड़े रहकर हमारे सभी दुष्कर्मों का निरीक्षण करते रहेंगे?
हम पाप पर पाप करते रहेंगे, और आप हमें साक्षी बनकर देखते रहेंगे?
आप क्या चाहते हैं कि हम भूल करते रहें? पाप की गठरी बाँधते रहें और उसका फल भुगतते रहें?"
उलाहना देते हुए उद्धव ने पूछा!
तब कृष्ण बोले-
"उद्धव, तुम शब्दों के गहरे अर्थ को समझो।
जब तुम समझकर अनुभव कर लोगे कि मैं तुम्हारे नजदीक साक्षी के रूप में हर पल हूँ, तो क्या तुम कुछ भी गलत या बुरा कर सकोगे?
तुम निश्चित रूप से कुछ भी बुरा नहीं कर सकोगे।
जब तुम यह भूल जाते हो और यह समझने लगते हो कि मुझसे छुपकर कुछ भी कर सकते हो, तब ही तुम मुसीबत में फँसते हो!
धर्मराज का अज्ञान यह था कि उसने माना कि वह मेरी जानकारी के बिना जुआ खेल सकता है!
अगर उसने यह समझ लिया होता कि मैं प्रत्येक के साथ हर समय साक्षी रूप में उपस्थित हूँ तो क्या खेल का रूप कुछ और नहीं होता?"

भक्ति से अभिभूत उद्धव मंत्रमुग्ध हो गये और बोले-
प्रभु कितना गहरा दर्शन है। कितना महान सत्य। 'प्रार्थना' और 'पूजा-पाठ' से, ईश्वर को अपनी मदद के लिए बुलाना तो महज हमारी 'पर-भावना' है। मग़र जैसे ही हम यह विश्वास करना शुरू करते हैं कि 'ईश्वर' के बिना पत्ता भी नहीं हिलता! तब हमें साक्षी के रूप में उनकी उपस्थिति महसूस होने लगती है।
गड़बड़ तब होती है, जब हम इसे भूलकर दुनियादारी में डूब जाते हैं।
सम्पूर्ण श्रीमद् भागवद् गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी जीवन-दर्शन का ज्ञान दिया है।
सारथी का अर्थ है- मार्गदर्शक।
अर्जुन के लिए सारथी बने श्रीकृष्ण वस्तुतः उसके मार्गदर्शक थे।
वह स्वयं की सामर्थ्य से युद्ध नहीं कर पा रहा था, लेकिन जैसे ही अर्जुन को परम साक्षी के रूप में भगवान कृष्ण का एहसास वह ईश्वर की चेतना में विलय हो गया!
यह अनुभूति थी, शुद्ध, पवित्र, प्रेममय, आनंदित सुप्रीम चेतना की!
तत-त्वम-असि!
अर्थात...
वह तुम ही हो।।

** "Hare Krishna" **🙏🌹
"Uddhav-Geeta"

Since Uddhav childhood was in the service of shri krishna as a charioteer, but he had never made any desire from Sri Krishna, nor did he ask for a blessing.
When Krishna was ready to fulfill his avatar, he called uddhav to himself and said:
" dear uddhav in my 'Avatar', many people have received blessings from me, but you never asked for anything! Ask for something

now, I want to give you.
I'll be satisfied with you, too.
Udhav did not ask anything for himself even after this. They only wanted to be the solution of the doubts that had the teachings of krishna in their mind, and to look at their artistry.
He asked Lord Krishna -
" God didn't understand many things in the events of Mahabharata!
Keep your ' advice ' different, while ' Personal Life ' looks something different!
Would you make me calm my knowledge to the pipo?"
Sri Krishna said -
"Uddhav I said to arjun in the war of kurukshetra, he was" Geetha
What do you want to know today, and what I will answer to you, is that
The "Uddhav-Geeta" will be known as
That's why I gave you this opportunity.
You feel free.
Uddhav started to ask -

" O Krishna, first tell me who is the true friend?"
Krishna said: " the true friend is the one who asks without a friend if you need it. "
Uddhav -
" Krishna, you were the dearest friend of Pandavas. In the form of free dams he always relied on you.
Krishna, you are great knowledgeable. You are the knower of the ghosts, present and future.
But you don't think you didn't work according to that definition of a true friend?
Why didn't you stop from playing dharmaraj (gambling)?
Let's do it well that you didn't stop them, but you didn't even turn the destiny into the favor of the dharmaraja!
If you wanted, yudhishthira could win!
You could have stopped at least the money, state and even after losing themselves!
Then, when they began to outwit their brothers, you could be able to get to the gamelobby! You didn't even do that? After that, when duryodhan made the pandavas a good luck, he inspired the draupadi to put up the plot, and he wanted to return everything to the win, at least you could interfere!
By your divine power, you were able to adapt to the dharmaraja.
At its place, you intervened, when draupadi was almost losing his modesty, you claimed to save draupadi's modesty by clothing!
But how can you even claim this?
He dragged a man into the hall and leaves so many people to dress up!
What is the modesty of a woman? What did you save?
If you did not help your loved ones at the time of crisis, how can you be called 'AD-Dangal'?
Say, what if you did not help during the crisis?
Is this the religion?"
They were asked to ask the questions of udhav and his eyes started shedding tears.
These are not the only questions of udhav. These questions arise in everyone's manōmastiṣka while reading mahabharat!
Uddhav gave us a question from the people of Sri Krishna.
Lord Krishna said to smile -
" dear uddhav, this is the law of the creation, so that the wiser wins.
At that time, duryodhan had discretion, not to the dharmaraja.
That's why the dharmaraja defeated. "

After seeing udhav shocked, Krishna said: " Duryodhan had a lot of money to play gambling, but he did not play the game of the game, so he used his maternal uncle śakuni. That's discretion. He could have thought in this way and offered to his cousin that I would play from them.
Just think, who wins if śakunī and I play?
Do you want the dice to come or follow me?
Let's go this thing. They can be forgiven for this thing they didn't join me in the game. But they made another big mistake from Vivek-emptiness!
And this is -
They prayed to me that I would not come to the meeting until I was called.

Because they wanted their misfortunes to play secretly with me.
They didn't want, I know they're playing gambling!
Thus they tied me up with their prayers! I was not allowed to come into the meeting-room!
Even after this I was waiting outside the room when someone calls me! Bhim, Arjun, nakul and sahadev have forgotten me! Just cussing your destiny and duryodhan!
On the order of his brother, when dus'sāśana draupadi brought his hair to the meeting-room, draupadi continued to deal with his potential!
Even then he didn't call me!
His intelligence was awakened when the dus'sāśana started to make it naked!
When he has dependency on himself,
Hari, Hari, Krishna Krishna, ABHAYAMA '
He appealed, then I got the opportunity to protect his modesty.
As soon as I was called, I reached an escrow.
Now tell my mistake in this situation?"
Uddhav said:
" Kanha, your explanation is effective, but I didn't have full satisfaction!
Can I ask another question?"
From the permission of Krishna, uddhav asked:
" it means that you will come only when you will be called? Will you not be automatic to help your devotee surrounding the crisis?"
Krishna Smiles -
" Udhav is the creation of each of his life based on his own rewards.
Neither do I run it, nor do i interfere with it.
I'm only a ' witness '.
I'll always see what's going on near you.
This is the religion of God. "

" Wow-wow, very good krishna!
So this means that you will keep monitoring all our actions by standing close to us?
We will continue to sin on sin, and you will see us as a witness?
What do you want us to forget? Keep the bundle of sin and keep the fruit in it?"
Uddhav asked me while giving up!
Then Krishna said -
" Uddhav, you understand the deep meaning of words.
And when you experience, I will be a witness to you. Will you, then, be able to do anything wrong?
You won't be able to do anything bad.
When you forget it and understand that you can do anything secretly, then you go in trouble! The ignorance of dharmaraja was that he believed that he could play gambling without my information!
If he had understood that I am present all the time with each other, the game would not have been anything else?"

Overwhelmed by devotion, udhav became fascinated and said -
The Lord is so deep. What great truth. ' PRAYER ' and ' Worship-text ', calling God for his help is just our ' feelings '. But as soon as we begin to believe that 'God' does not move even without a leaf! Then we feel his presence as a witness.
There is a mess when we drown it in worldliness.
In the whole Srimad Bhagwat Gita, Sri Krishna has given the knowledge of this philosophy to Arjuna.
Sarthi means-Guide.
Shri Krishna, become a charioteer for Arjuna, was virtually his guide.
He was not able to fight with his own power, but as soon as he was the ultimate witness to Arjun, the feeling of lord krishna got merged into the consciousness of God!
It was feelings, pure, Holy, loving, blissful supreme consciousness!
तत-त्वम-असि!
I...
It's you. .

** "Hare Krishna" ** 🙏🌹

.

Rate this translation

1 Comment